दुर्घटनाओं में बच सकते हैं लाखों जीवन

भारत डोगरा

विश्व में दुख-दर्द के कारणों में दुर्घटनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। दुर्घटनाओं से हमारा आशय उन सभी अचानक होने वाली प्रतिकूल घटनाओं से है जो सामान्य से हटकर हैं। प्राकृतिक आपदाओं, अपराधों व बीमारियों की गिनती दुर्घटनाओं में नहीं होती है।

सबसे अधिक चर्चित दुर्घटनाएं सड़क दुर्घटनाएं हैं पर यह दुर्घटनाओं का केवल एक पक्ष है। औद्योगिक व कार्यस्थल दुर्घटनाओं की क्षति इनसे भी अधिक हो सकती है। घरेलू दुर्घटनाओं के संदर्भ में सबसे कम प्रामाणिक आंकड़े उपलब्ध हैं पर इनसे भी बहुत क्षति होती है। इसके अतिरिक्त मेलों, होटलों व बड़ी भीड़ या मनोरंजन स्थलों पर होने वाली दुर्घटनाएं चर्चा का विषय बनती रहती हैं। दुर्घटना प्रायः किसी विस्फोट, टक्कर, आग, रिसाव, निर्माण ढहने, भगदड़, गिरने आदि के रूप में होती हैं।

दुर्घटना अचानक घटित असामान्य घटनाएं हैं पर इसका अर्थ यह नहीं है कि इन्हें रोका नहीं जा सकता है। इस बारे में पर्याप्त सावधानी बरती जाए तो दो-तिहाई से अधिक दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है या उनसे होने वाली क्षति को कम किया जा सकता है।

अनुमान है कि विश्व में सभी दुर्घटनाओं में प्रति वर्ष लगभग 20 लाख मौतें होती हैं व इससे कई गुना अधिक लोग घायल होते हैं। दुर्घटनाओं से मौतों में प्रायः उन लोगों का प्रतिशत अधिक होता है जो परिवार के निर्वाह में अधिक सक्रिय भूमिका निभाते हैं। सामान्य मौतों में वृद्ध लोगों का प्रतिशत अधिक होता है जबकि दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों में युवा व मध्य आयु के लोग अधिक होते हैं। कार्यस्थल पर होने वाली मौतें तथा घायल व अपंग होने की घटनाएं पूरी तरह उन्हीं व्यक्तियों को प्रभावित करती हैं जिनके आय से परिवार चलते हैं। इस तरह दुर्घटनाओं की चपेट में आने वालों से कहीं अधिक संख्या उन निर्भर लोगों की है जिनका जीवन दुर्घटनाओं से प्रभावित होता है। गंभीर दुर्घटना से एक पूरे परिवार का जीवन पूरी तरह व प्रतिकूल रूप से बदल सकता है। दुर्घटनाओं से कई लोग अपंग हो जाते हैं व इस अपंगता का असर अनेक वर्षों तक बना रह सकता है। विशेषकर दूर-दूर के गांवों में रहने वाले व्यक्तियों व निर्धन परिवारों के लिए उचित इलाज की व्यवस्था भी नहीं हो पाती है।

प्रायः दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु सामान्य स्थिति में होने वाली मौत से अधिक दुख पहुंचाने वाली होती है क्योंकि यह अचानक होती है। इस कारण दुर्घटना में होने वाली मौत के कारण कई बार परिवार के सदस्य सदमे की स्थिति में आ जाते हैं। इसका उनके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है।

अचानक होने वाली दुर्घटनाओं में इलाज के लिए अधिकांश परिवारों के पास पर्याप्त आर्थिक संसाधन नहीं होते हैं। बीमे की सुविधा काफी कम परिवारों के पास है। बीमे की राशि प्राप्त करना भी काफी कठिन और समय लगने वाला हो सकता है जबकि इलाज के लिए तुरंत रुपए चाहिए होते हैं। चिकित्सा सुविधाएं निरंतर महंगी होती जा रही हैं। इस स्थिति में अनेक परिवार उचित इलाज नहीं करवा पाते हैं या उन्हें ऊंचे ब्याज पर कर्ज़ लेकर इलाज करवाना पड़ता है। जहां एक ओर, कर्ज़ चुकाना पड़ता है वहीं दूसरी ओर आय अर्जन की क्षमता कम हो जाती है जिससे परिवार की कठिनाइयां बहुत बढ़ जाती हैं।

इन विभिन्न संदर्भों में दुर्घटनाओं से होने वाले दुख-दर्द को समझना ज़रूरी है। दुर्घटनाओं से बहुत गंभीर दुख-दर्द जुड़ा है पर दुर्घटनाओं को दूर करने की कोई समग्र योजना हमारे देश में अभी तक नहीं बनी है। सभी दुर्घटनाओं को कम करने के प्रयास करने या उसकी योजना बनाने के लिए कोई संस्थान भी देश में नहीं है। विभिन्न तरह की दुर्घटनाओं को कम करने के कुछ छिटपुट प्रयास ज़रूर होते हैं जो यातायात सम्बंधी दुर्घटनाओं के संदर्भ में अधिक

दिखाई देते हैं। इस बारे में कम से कम चर्चा तो होती है, पर औद्योगिक व कार्यस्थल दुर्घटनाओं पर प्रायः समुचित चर्चा भी नहीं होती है। भोपाल गैस दुर्घटना से पता चला कि एक ही औद्योगिक दुर्घटना से कितनी गंभीर व असहनीय क्षति हो सकती है। कार्यस्थल की दुर्घटनाओं, विशेषकर मज़दूरों को प्रभावित करने वाली दुर्घटनाओं को प्रायः कम करके बताया जाता है व इसके प्रामाणिक आंकड़े भी उपलब्ध नहीं होते हैं। घरेलू दुर्घटनाओं को कम करने की कोई समग्र सोच या योजना अभी सामने नहीं आ सकी है।

इस बारे में ज़रूरत से कहीं कम अनुसंधान होने के बावजूद इतना स्पष्ट है कि अधिकांश दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है या उनसे होने वाली क्षति को कम किया जा सकता है। इनमें से कुछ कार्य नीतिगत व कानून के स्तर पर होने ज़रूरी हैं व इसके साथ अनेक सावधानियों को अपनाने के लिए लोगों में जागरूकता बढ़ाना ज़रूरी है। यदि सड़कें व फुटपाथ अच्छी हालत में हों, गाड़ियां सुरक्षा के मानदंड के अनुसार बनी हों, नशे में गाड़ी न चलाई जाए, सीट बेल्ट व हेलमेट का उचित उपयोग हो, मोबाइल-इयरफोन का अनुचित उपयोग न हो, ड्राइविंग लाइसेंस सही ढंग से दिए जाएं, ट्रैफिक नियमों का उचित प्रचार हो तथा दुर्घटना होने पर आसपास के लोग व नज़दीकी अस्पताल मददगार हों तो अधिकांश सड़क दुर्घटनाओं को रोका जा सकेगा अथवा उनसे होने वाली मौत व अन्य क्षति को कम किया जा सकेगा।

इसी तरह फैक्ट्री में उचित सुरक्षा व्यवस्था हो, मज़दूरों को सुरक्षा प्रशिक्षण व उपकरण मिलें, उन्हें बहुत थके होने की हालत में काम न करना पड़े, खतरनाक तकनीकों से बचा जाए तो मज़दूरों को कार्यस्थल की अधिकांश दुर्घटनाओं से बचाया जा सकता है।

तीर्थस्थानों, मेलों, बड़ी भीड़ के स्थानों पर होने वाली अधिकांश दुर्घटनाओं को उचित नियोजन से रोका जा सकता है। घरेलू दुर्घटनाओं को रोकने में दुर्घटनाओं के कारणों की सही पहचान करने व इनके रोकथाम का प्रचार-प्रसार कराने की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसमें मीडिया की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। वैसे मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका घरेलू दुर्घटनाओं के अतिरिक्त सभी तरह की दुर्घटनाओं को कम करने में भी है। मीडिया की सार्थक भूमिका से बहुत से अमूल्य जीवन बचाए जा सकते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***